



भास्कर लक्ष्य

भारत को 2020 तक 14 मिलियन अतिरिक्त स्टूडेंट्स के लिए अतिरिक्त 600-700 यूनिवर्सिटीज के फ्री कोर्सेज के साथ ऑनलाइन लर्निंग शिक्षा के मजबूत दि

टॉप यूनिवर्सिटीज से जोड़ रही है ऑनलाइन

क्वालिटी एजुकेशन की विस्तृत पहुंच के लिए विश्व भर की यूनिवर्सिटीज ऑनलाइन लर्निंग को बढ़ावा दे रही हैं। एडेक्स के सीईओ अनंत अग्रवाल की राय में शिक्षा क्षेत्र के पिछले सौ साल में सबसे बड़ा इनोवेशन ऑनलाइन लर्निंग है। असल में इंटरनेट ने उच्च शिक्षा को तेजी से बदला है। नतीजतन ऑनलाइन डिग्री मुहैया करवाने वाली मल्टीबिलियन डॉलर इंडस्ट्री (फॉर प्रोफिट व नॉन प्रोफिट) में उछाल आया है। दूसरी ओर मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्सेज (मूक्स) ने इस तेजी में अहम भूमिका निभाई है। दुनिया भर की टॉप यूनिवर्सिटीज अपने प्रोग्राम्स की पूरी रेंज मूक्स के जरिए फ्री उपलब्ध करवा रही हैं। भारत में भी इसके लिए ग्रांड मजबूत है।

प्रमुख टारगेट है भारत

भारत दुनिया की प्रमुख ऑनलाइन यूनिवर्सिटीज के लिए बड़ा टारगेट है। हर साल बढ़ती ग्रेजुएट्स की संख्या को देखते हुए ऑनलाइन कोर्सेज की जरूरत यहां बढ़ रही है। भारत सरकार

2030 तक यूनिवर्सिटी एनरोलमेंट को 30 प्रतिशत बढ़ाना चाहती है, यह तथ्य भी ऑनलाइन एजुकेशन प्रोवाइडर्स के लिए बड़े अवसर तैयार कर रहा है। कोर्सेज के सीईओ रिक लेविन की राय में इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य तक पहुंचने के लिए सिर्फ नई यूनिवर्सिटीज की स्थापना पर निर्भर नहीं हुआ जा सकता। ऑनलाइन कोर्स इस गैप को भरने में मदद कर सकते हैं। 17 मिलियन यूजर्स (1.3 मिलियन भारतीय) के साथ कोर्सेज भारत में विस्तार करना चाहता है। हाल में यूनिवर्सिटी ऑफ दी पीपल ने भी अपने दरवाजे भारतीय स्टूडेंट्स के लिए खोल दिए हैं। ऐसे ही अन्य कई प्लेटफॉर्म हैं जो भारत में विस्तार के लिए जुटे हैं।

बढ़ती जरूरत

वर्तमान में डिस्टेंस लर्निंग डिग्रीज के लिए भारत में 3.5 मिलियन स्टूडेंट्स हैं। ब्रिटिश काउंसिल की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक 2025 तक भारत के पास सबसे बड़ी स्टूडेंट एज पॉपुलेशन होगी। ऐसा अनुमान है कि अगले दस सालों में हायर

एजुकेशन के इच्छुक छात्रों की संख्या वर्तमान 26 मिलियन से बढ़कर 40 मिलियन तक पहुंचेगी। इसका अर्थ है कि भारत को 2020 तक 14 मिलियन अतिरिक्त स्टूडेंट्स के लिए 600-700 अतिरिक्त यूनिवर्सिटीज की जरूरत होगी। ऐसे में ऑनलाइन लर्निंग एक मजबूत विकल्प के रूप में उभरेगी।

इंटेलिजेंट स्टूडेंट्स करते हैं ये कोर्स

ऐसा नहीं है कि जिनकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि कमजोर है, वे ही इन कोर्सेज में रजिस्ट्रेशन करवाते हैं, बल्कि हार्वर्ड ग्रेजुएट्स से लेकर आईआईटीयंस तक ये कोर्स कर रहे हैं। न्यूयॉर्क टाइम्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन और यूनिवर्सिटी ऑफ पेन्सिलवेनिया द्वारा उपलब्ध मूक में प्रवेश लेने वाले दस में से आठ स्टूडेंट्स के पास किसी न किसी प्रकार की डिग्री थी।

क्या ये कोर्स यूनिवर्सिटी एजुकेशन की जगह ले सकते हैं

नहीं, विशेषज्ञों की राय में ऑनलाइन एजुकेशन प्रोवाइडर्स का मकसद स्टूडेंट्स को यूनिवर्सिटी अनुभव प्रदान करना नहीं होता। बल्कि यह शिक्षा ऐसे लोगों को अवसर देती है जिनके पास क्वालिटी एजुकेशन तक पहुंचने के साधन या समय की कमी होती है। ज्यादातर केसेज में ये कोर्सेज यूनिवर्सिटी एजुकेशन की जगह नहीं लेते, बल्कि उच्च शिक्षा की अनुपस्थिति या फिर हायर एजुकेशन को मजबूत बनाने के विकल्प के रूप में काम आते हैं।

क्यों बढ़ रहा है यह ट्रेंड

शिक्षा के महंगे खर्च से बचने या फिर मौजूदा डिग्रियों को और मजबूती देने के लिए इन कोर्सेज का ट्रेंड बढ़ रहा है। साथ ही दुनिया भर की नामचीन यूनिवर्सिटीज जैसे हार्वर्ड, स्टैनफोर्ड और

ऑनलाइन शिक्षा के लिए प्लेटफॉर्म

एमआईटी ओपन कोर्सवेयर

175 मिलियन डिजिटर्स व 2260 कोर्सेज के साथ मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी अपने अंडरग्रेजुएट व ग्रेजुएट लेवल कोर्सेज से जुड़े एजुकेशन मटीरिअल ऑनलाइन उपलब्ध करवाता है।

एनपीटीईएल

एलिसन

6,000,000 लर्नर्स और 750 कोर्सेज के साथ यह एक फ्री सर्टिफाइड लर्निंग प्लेटफॉर्म है जहां डिजिटल लिटरेसी व आईटी स्किल्स, बिजनेस व एंटरप्राइज स्किल्स, फाइनेंशियल एंड इकोनॉमिक लिटरेसी, हेल्थ लिटरेसी आदि में उपयोगी कोर्स किए जा सकते हैं।

भारत सरकार का यह इनिशिएटिव अब एक दशक पुराना हो चुका है। कुरिकुलम बेस्ड वीडियो व वेब कोर्सेज के जरिए यह प्रोग्राम भारत में इंजीनियरिंग एजुकेशन को बेहतर बनाने की दिशा में काम कर रहा है। यह प्रोग्राम सात आईआईटी और आईआईएससी बेंगलुरु द्वारा संचालित है। 620,000 रजिस्टर्ड उम्मीदवारों के साथ एनपीटीईएल आज 990 कोर्स ऑफर कर रहा है। फिलहाल मूक प्लेटफॉर्म को आगे बढ़ाने व अपने कोर्सेज को मान्यता प्रदान करने के लिए एनपीटीईएल यूनिवर्सिटीज और नैसकॉम से बात कर रहा है। ताकि नौकरी खोज रहे उम्मीदवारों के लिए ये कोर्स काम के साबित हो सकें।

एडएक्स

5 मिलियन लर्नर्स के साथ एडएक्स एक प्रमुख मूक प्रोवाइडर है जो दुनिया भर की बेस्ट यूनिवर्सिटी के कोर्स बिना किसी चार्ज के करने में मदद करता है।

डॉ. नजीब लेक्चर्स

दुनिया के लोकप्रिय मेडिकल लेक्चर्स इस प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध हैं। मेडिकल, डेंटिस्ट्री, नर्सिंग व फार्मसी स्टूडेंट्स बड़ी संख्या में इसका इस्तेमाल कर रहे हैं।

खान एकेडमी

फ्री और वर्ल्ड क्लास एजुकेशन मुहैया करवाने वाली खान एकेडमी अब अपना हिंदी प्लेटफॉर्म भारत में लॉन्च कर चुकी है। एकेडमी ने हाल में फ्री व हाई क्वालिटी एजुकेशन देने के लिए टाटा ट्रस्ट के साथ पांच साल की साझेदारी भी की है।

कॉस्मो लर्निंग

729 कोर्सेज और 20,692 वीडियो लेक्चर्स के साथ यह फ्री एजुकेशनल वेबसाइट इंजीनियरिंग, हिस्ट्री, साइंस, लॉ में कोर्सेज करवाती है।

ओपन कल्चर

यह फ्री कल्चरल व एजुकेशनल रिसोर्स अलग-अलग यूनिवर्सिटीज के 1,150 ऑनलाइन कोर्सेज करवाता है जिनमें हिस्ट्री, बायोलॉजी, इंजीनियरिंग, मेडिकल आदि डोमेन शामिल हैं।

टैलेंटएज के अध्ययन के मुताबिक इस साल इन कोर्सेज के अधिकतम उम्मीदवार टीअर 2 शहरों से होंगे।

के लिए अतिरिक्त 600-700 यूनिवर्सिटीज की जरूरत होगी।
ऑनलाइन लर्निंग शिक्षा के मजबूत विकल्प के रूप में उभरेगी।

ड रही है ऑनलाइन लर्निंग

एजुकेशन के इच्छुक छात्रों की संख्या वर्तमान 26 मिलियन से बढ़कर 40 मिलियन तक पहुंचेगी। इसका अर्थ है कि भारत को 2020 तक 14 मिलियन अतिरिक्त स्टूडेंट्स के लिए 600-700 अतिरिक्त यूनिवर्सिटीज की जरूरत होगी। ऐसे में ऑनलाइन लर्निंग एक मजबूत विकल्प के रूप में उभरेगी।

इंटेलिजेंट स्टूडेंट्स करते हैं ये कोर्स

ऐसा नहीं है कि जिनकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि कमजोर है, वे ही इन कोर्सेज में रजिस्ट्रेशन करवाते हैं, बल्कि हार्वर्ड ग्रेजुएट्स से लेकर आईआईटीयंस तक ये कोर्स कर रहे हैं। न्यूयॉर्क टाइम्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन और यूनिवर्सिटी ऑफ पेन्सिलवेनिया द्वारा उपलब्ध मूक में प्रवेश लेने वाले दस में से आठ स्टूडेंट्स के पास किसी न किसी प्रकार की डिग्री थी।

क्या ये कोर्स यूनिवर्सिटी एजुकेशन की जगह ले सकते हैं

नहीं, विशेषज्ञों की राय में ऑनलाइन एजुकेशन प्रोवाइडर्स का मकसद स्टूडेंट्स को यूनिवर्सिटी अनुभव प्रदान करना नहीं होता। बल्कि यह शिक्षा ऐसे लोगों को अवसर देती है जिनके पास क्वालिटी एजुकेशन तक पहुंचने के साधन या समय की कमी होती है। ज्यादातर केसेज में ये कोर्सेज यूनिवर्सिटी एजुकेशन की जगह नहीं लेते, बल्कि उच्च शिक्षा की अनुपस्थिति या फिर हायर एजुकेशन को मजबूत बनाने के विकल्प के रूप में काम आते हैं।

क्यों बढ़ रहा है यह ट्रेंड

शिक्षा के महंगे खर्च से बचने या फिर मौजूदा डिग्रियों को और मजबूती देने के लिए इन कोर्सेज का ट्रेंड बढ़ रहा है। साथ ही दुनिया भर की नामचीन यूनिवर्सिटीज जैसे हार्वर्ड, स्टैनफोर्ड और

प्रिंसटन में पढ़ने की खाहिश इसके जरिए पूरी हो सकती है। इसके अलावा प्रोफेशनल्स अपने कैरिअर को मजबूती देने के लिए भी इन कोर्सेज से जुड़ रहे हैं। दूसरी ओर बड़ी संख्या में यूनिवर्सिटीज इस मिशन का हिस्सा इसलिए बन रही हैं क्योंकि वे अपनी पहुंच में विस्तार करना चाहती हैं। दोनों ही वजहें इस बाजार को मजबूत बनाने में योगदान दे रही हैं।

कितने कारगर हैं कोर्स

हालांकि ज्यादातर मूक्स प्री हैं, लेकिन कई सिंगल कोर्सेज के लिए वैरिफाइड सर्टिफिकेट्स और स्पेशलाइजेशन कोर्सेज फीस के साथ उपलब्ध हैं। वैरिफाइड सर्टिफिकेट इस बात का प्रमाण है कि लर्नर ने सभी असाइनमेंट्स व परीक्षाएं संतोषजनक स्थिति में पूरे किए हैं। वैरिफाइड सर्टिफिकेट

होल्डर इस सर्टिफिकेट को अपने लिंकड इन प्रोफाइल पर अपलोड कर सकते हैं जहां रिक्रूटर्स उन्हें देख सकते हैं। इसके अलावा नए स्टार्टअप्स दोनों तरह के उम्मीदवारों को मौका दे रहे हैं पहले वे जिन्होंने खुद को कॉलेजों में एनरोल किया है और दूसरे वे जिन्होंने खुद ही सीखा है।

टैलेंटएज के अध्ययन के मुताबिक इस साल इन कोर्सेज के अधिकतम उम्मीदवार टीअर 2 शहरों से होंगे।

